5) Social Condition:→ When we study the social conditions of Plato and Aristotle in comparative terms of idealism and realism, the reason for this difference is understood by us. Plato belonged to the aristocracy, had no family, so naturally he became imaginative and mystic. Aristotle was the upper middle family, had a child, ~~me~~ and had the experience of Grahasthi- family which made him practical and realistic.

6) Ranchna style - This difference between Aristotle and Plato is reflected in the composition of his works as well. It is as if an imaginative poet is reading his thoughts ~~while reading his thoughts~~ while reading Ripaslik. Aristotle chi Politics shali is proselytizing gurus and simple, expressing his realistic nature. Conc:→ Thus was basically idealistic. Aristotle was relatively realistic, there is no doubt that the political concepts of both are found to be similar. After all, Aristotle was a disciple of plato and for 20 years he had studied the scriptures in the company of his master. Therefore, there is nothing surprising in the original syllogistic ~~tink~~ thinking when both of them as expressed in their subject. Plato did not consider politics to be a philosophical and idealist excess, but he was

not the first person to separate politics ~~to be a philosophical~~ and idealist excess, but ~~he~~ from ethics. He provided the systematic direction of political science, independent classification of it. His charitableness consists in the fact that he. Before the creation of politics, the constitution of 158 politics institution was studies. He adopted the platonic superlative-medium-minded ideas in the prime copy space, thus, if the idealistic ~~or~~ exponents Aristotle Fohm could call the enterprice a realist thinker and father of political science.

Date - 1-4-2020

Scanned with Can

5) सामाजिक स्थितियां — आदर्शवादिता और यथार्थपरकता की तुलनात्मक दृष्टि से जब हम प्लेटो और अरस्तू की सामाजिक स्थितियों का अध्ययन करते हैं, तो इस अंतर का कारण हमारी समझ में आ जाता है। प्लेटो अभिजात्य वर्ग का था, उसका कोई परिवार नहीं था इसलिए स्वभावत: वह कल्पनाशील और रहस्यवादी बन गया। अरस्तू उच्च मध्यम परिवार का था, जिसके स्त्री, थी संतान थी और उसके पास गृहस्थी-परिवार का अनुभव था जिसने उसे व्यावहारिक और यथार्थपरक बनाया।

6) रचना शैली — अरस्तू और प्लेटो का यह अंतर हमें उनकी कृतियों की रचना शैलियों में भी परिलक्षित होता है।

'रिपाढलिक' को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे कोई कल्पनाशील कवि अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हो। अरस्तू की 'पोलिटिक्स' की शैली गद्यात्मक, नीरस और सरल है, जो उसके यथार्थवादी स्वभाव को व्यक्त करती है।

निष्कर्ष :—

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्लेटो जहाँ मूलत: आदर्शवादी था, वहां अरस्तू अपेक्षाकृत यथार्थवादी था इसमें संदेह नहीं कि दोनों की राजनीतिक अवधारणाओं में समानता पाई जाती है। आखिर अरस्तू प्लेटो का शिष्य था और २० वर्ष तक उसने अपने गुरु के सान्निध्य में शास्त्रों का अध्ययन किया था

Scanned with Cam

अतः मूलभूत सैद्धांतिक चिंतन मे दोनो मे साम्यता दिखई दे, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। किंतु हम इनके विषय मे व्यक्त की गई उन दोनो ही अतिवादी बातो को अस्वीकार करते है।

→ प्लेटो ने कल्पनाशील और आदर्शवादी अधिक होने के कारण राजनीति पर कभी वैज्ञानिक दृष्टि से विचार नही किया उसने राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र मे अंतर नही ढूंढा। अरस्तू प्रथम व्यक्ति था जिसने राजनीति को नीतिशास्त्र से अलग किया। उसने राजनीतिशास्त्र को व्यवस्थित दिशा प्रदान की, उसका स्वतंत्र वर्गीकरण किया। उसकी यथार्थपरकता इस बात से प्रमाणित होती है कि उसने 'पालिटिक्स' की रचना के पूर्व 158 राजनीतिक संस्थाओं के संविधान का अध्ययन कर डाला था। उसने प्लेटो की अतिशयोक्ति - प्रधान प्रवृत्ति के स्थान पर मध्यममार्गी विचारों को अपनाया इस प्रकार प्लेटो यदि आदर्शवादी था, तो अरस्तू को हम प्रथम यथार्थवादी विचारक तथा राजनीतिक विज्ञान का जनक कह सकते है।

Scanned with Cam